Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. Semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

1

"Dialectical method"

Q. Discuss the salient features of Hegel's Dialectics. (हीगेल के द्वन्द्वात्मक न्याय के प्रमुख लक्षणों की व्याख्या कीजिये?)

Ans:→ हीगेल के दर्शन में द्वन्द्व न्याय का सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है। द्वन्द्व न्याय पाश्चात्य दर्शन की प्राचीन प्रणाली है। जीनो के दर्शन में द्वन्द्व न्याय को एक तार्किक विधि माना गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य विरोधी को पराजित करना है। काण्ट के दर्शन में ही सर्वप्रथम दार्शनिक विधि के रूप में इसका प्रयोग हुआ है। काण्ट के अनुसार द्वन्द्व न्याय के द्वारा बुद्धि दो निष्कर्षों पर पहुँचती है। पक्ष, प्रतिपक्ष या खण्डन मण्डन। अर्थात् तत्व के स्वरूप का निर्णय द्वन्द्व न्याय से नहीं हो सकता। इससे दो विरोधी निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, परंतु यथार्थ स्वरूप की उपलब्धि इससे नहीं हो सकती।

हीगेल की सबसे बड़ी देन यह है कि तत्व के स्वरूप का निर्णय द्वन्द्व न्याय से करते हैं। अतः द्वन्द्व न्याय केवल विवाद की विधि नहीं, पक्ष और विपक्ष का समर्थन नहीं, वरन् परम तत्व का निर्णायक है। हीगेल परमतत्व के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

हीगेल के द्वन्द्व न्याय में

निषेध का विचार बहुत महत्वपूर्ण है। इनके अनुसार निषेध एक शक्ति है, जिससे जगत का विकास होता है। साधारणतः निषेध का अर्थ विरोध है। विरोध को साधारणतः तर्कशास्त्री अनावश्यक मानते हैं। तर्कशास्त्रियों के अनुसार तत्व को निर्णय के लिए तादात्म्य के नियम की आवश्यकता है न कि विरोध के नियम की। हीगेल तत्व निर्णय के लिए तादात्म्य की अपेक्षा विरोध को महत्वपूर्ण मानते हैं। विरोध ही जीवन का स्त्रोत है तथा परिवर्तन का आधार है। हीगेल के अनुसार निषेध ही विश्व का प्राण है। निषेध के बिना हम विश्व के विकास की व्याख्या नहीं कर सकते।

द्वन्द्व न्याय के द्वारा

हीगेल परम विज्ञान के माध्यम से सांसारिक वस्तुओं की उत्पत्ति की व्याख्या करते हैं। अतः त्रिक विकास सम्पूर्ण जागतिक पदार्थ तथा परमतत्व की व्याख्या है। त्रिकरूप के तीन चरण हैं —

1. पक्ष (thesis)
2. प्रतिपक्ष (Anti thesis)
3. समन्वय (synthesis)

इन तीनों की व्याख्या हीगेल अपने द्वन्द्व न्याय की बड़ी कुशलता के साथ करते हैं तथा इन्हीं के माध्यम से विश्व-विकास की व्याख्या करते हैं। विकास का यह त्रिकरूप परम तत्व की भी व्याख्या करता है तथा परमतत्व से विश्व की उत्पत्ति की भी व्याख्या

करता है।

एक और अनेक की समस्या का समाधान हीगेल विरोधी समन्वय सिद्धान्त के द्वारा करते हैं। साधारणतः हम समझते हैं कि एक और अनेक विरोधी है परन्तु हीगेल के अनुसार विरोधी का समन्वय संश्लेषण (Synthesis) में होता है। भाव और अभाव (Being and non being) दोनों विरोधी है परन्तु हमने देखा है कि किसी वस्तु का भाव तो उसके सभी गुणों के अभाव के बराबर है। अतः दोनों में तादात्म्य सम्बन्ध है। शुद्ध भाव = शुद्ध अभाव। इन दोनों का समन्वय सम्भवन में हो जाता है। इस दृष्टि से एक और अनेक के विरोधियों में तादात्म्य सम्बन्ध है।

(1) पक्ष (Thesis) – यह पूर्ण सत है। हीगेल के अनुसार यही परम तत्व है निरपेक्ष विज्ञान है। इसकी उपलब्धि हमें तार्किक विश्लेषण के द्वारा होती है। जैसे – यह मेज गोल है या हरा है, इस वाक्य से यदि हम गोल, हरा इत्यादि सभी विशेषणों को निकाल देते अन्त में 'यह मेज है' केवल यही बच जायेगा। यह मेज शुद्ध मेज की सत्ता है या उसका अस्तित्व है। हीगेल के अनुसार यह अस्तित्व या सत्ता ही पूर्ण सत है। मेज से हम हरे नीले इत्यादि गुणों निकाल सकते हैं परन्तु उसकी सत्ता को नहीं निकाल सकते। यह शुद्ध

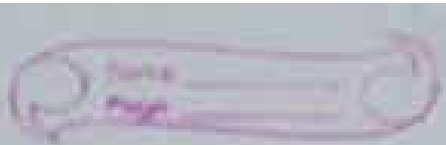

सत्ता ही परमतत्व है। सत का कभावसम्भव नहीं और तत्व का निषेध नहीं किया जा सकता। इसीलिए सत या शुद्ध तत्व को हीगेल प्रथमतत्व या चरमतत्व मानते हैं। यह शुद्ध भाव है। इसकी उपलब्धि सभी गुणों या विशेषणों के निषेध से होती है।

(2) प्रतिपक्ष (Anti-thesis):—

यह अभाव का निषेध है। इसे असत (Non-being) कहते हैं। इसकी उपलब्धि सभी सत के निषेध से होती है। जैसे — यह मेज लाल या पीला है। इस वाक्य से हम लाल पीला इत्यादि के निषेध करने से शुद्ध अस्तित्व पर पहुँचते हैं। परन्तु यह शुद्ध अस्तित्व या भाव सभी गुणों का अभाव है। हीगेल का कहना है कि भाव और अभाव सत और असत दोनों बराबर हैं। किसी भी वस्तु के भाव को बतलाना उसके अभाव का निषेध करना है। अतः सभी गुणों का निषेध ही भाव है या असत का निषेध ही सत है।

(3) समन्वय (Synthesis)

सत शुद्ध सत्ता है। असत अभाव या निषेध है। किसी भी वस्तु की शुद्धता उसके गुणों में बदल जाती है। इसी से विशेष वस्तु की उत्पत्ति होती है। भाव और अभाव में परिवर्तन ही समन्वय है। यह भाव और अभाव दोनों का एक साथ मिलना है। यह समन्वय ही विज्ञान का मूर्त रूप है, सत का विशेष रूप है जाति का व्यक्तिगत रूप है, सामान्य

की विशिष्ट प्रतीति है। इस समन्वय में पक्ष और प्रतिपक्ष का विरोध दूर हो जाता है। दोनों के गुणों का समन्वय हो जाता है। विश्व के समस्त पदार्थ इसी समन्वय के प्रतीक हैं।

हीगेल के अनुसार पक्ष, विपक्ष और समन्वय का क्रम चलता रहता है। इसी से वस्तुओं का विकास भी चलता रहता है। समन्वय का अन्त नहीं। समन्वय पुनः दूसरी अवस्था में पक्ष बनता है। अन्त में भाव और अभाव मिलकर पुनः एक समन्वय होता है। हीगेल के अनुसार तत्व का यही विशिष्ट द्वैत रूप है। प्रथम अभेद है, दूसरा भेद है और तीसरा दोनों का समन्वित रूप है। यही भेद विशिष्ट अभेद या विशिष्ट द्वैत रूप है। हीगेल द्वैत और अद्वैत दोनों को अपूर्ण मानते हैं। इनके अनुसार विशिष्टाद्वैत ही पूर्ण है, क्यों कि यह अभेदपूर्वक भेद या भेदपूर्वक अभेद है। किसी भी वस्तु की उत्पत्ति में भाव और अभाव दोनों का समन्वय है। शुद्ध भाव केवल काल्पनिक है। भाव का निषेध ही अभाव है। किसी भी वस्तु की उत्पत्ति में उस वस्तु का शुद्ध रूप तथा उसका विरोधी रूप दोनों सम्मिलित हैं। यही हीगेल का विशिष्टाद्वैत रूप है।

पक्ष, प्रतिपक्ष और समन्वय ही हीगेल का त्रिक विकास

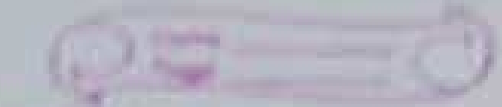

है। इसका प्रथम चरण (पक्ष) शुद्ध सत्ता है। यह सभी ज्ञान की शुद्ध सत्ता है। दूसरा चरण (प्रतिपक्ष) खण्डन है। यह पहले चरण का विरोधी है। यह खण्डन का खण्डन है। प्रत्येक विधि का विरोधी है और प्रत्येक निषेध की विधि है। तीसरे चरण में दोनों का समन्वय है। विधि और निषेध पक्ष और प्रतिपक्ष एक दूसरे के पूरक हैं, एक दूसरे के नितान्त विपरीत नहीं। हीगेल के अनुसार सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति इसी सत् असत् और समन्वय का स्वरूप है।

विकास के ये तीनों चरण संसार की सभी वस्तुओं की उत्पत्ति में लागू हैं। तात्पर्य यह है कि सभी वस्तुओं की उत्पत्ति द्वन्द्वात्मक है। जैसे हम शुद्ध सत्ता को लें, कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जिसकी सत्ता न हो, अतः सत्ता शुद्ध सत्ता है, सर्वव्यापक है, सर्वाधार है। परन्तु शुद्ध सत्ता तो केवल कल्पना है यह गुण रहित या निर्विशेष है। शुद्ध सत्ता का ज्ञान हमें किसी धर्म या गुण के माध्यम से ही हो सकता है। अतः धर्म के लिए धर्मी का ज्ञान आवश्यक है। यह धर्म ही धर्मी में बदला जाता है। धर्म का धर्मी में बदलना ही समन्वय है।

हीगेल के उपरोक्त विकासवाद की कुछ मान्यताएँ हैं। सर्वप्रथम हीगेल के अनुसार निषेध का नियम सबसे महत्वपूर्ण नियम है। निषेध

[illegible] भी किसी वस्तु का विशिष्टीकरण [illegible] का कारण [illegible] प्राप्त है। हीगेल है। स्पिनोजा की [illegible] के अनुसार निषेध [illegible] कहलाता [illegible] जाता है [illegible] जाता है। अतः [illegible] का [illegible] है। इसलिए कारण [illegible] [illegible] अनिश्चित [illegible] मान लिया जाता है। [illegible] है। निषेध तो हीगेल की प्रसिद्ध उक्ति गुणों का सूचक है, (Negation [illegible] or limitation) [illegible] स्पिनोजा के [illegible] विपरीत है। स्पिनोजा के अनुसार गुणों का निर्धारण तो वस्तु का निषेध है, (Determination is negation) हीगेल ठीक इसके विपरीत बतलाते हैं कि निषेध ही गुणों का सूचक है।

कुछ लोगों का कहना है कि हीगेल के विकासवाद में विरोध नियम (Law of Contradiction) का निषेध है। हीगेल के विकासवाद में भाव तथा अभाव में तादात्म्य सम्बन्ध है। विरोध के नियम के अनुसार भाव और अभाव नियम में तादात्म्य नहीं हो सकता। हीगेल के अनुसार सद्भाव और अभाव एक है। यही हीगेल का प्रसिद्ध विरोध का समन्वय है। हमने पहले देखा है कि पक्ष और विपक्ष दोनों का समन्वय सम्पक्ष में होता है। इसी के अनुसार हीगेल एक और अनेक का समन्वय करते

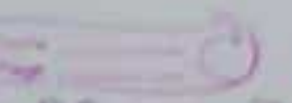

हैं। एकका विरोधी अनेक हैं, तथा अनेकका विरोधी एक हैं परन्तु निषेध के नियम के अनुसार विरोधों में तादात्म्य है, इनका समन्वय सम्भव है। हीगेल के अनुसार अ और – अ में तादात्म्य है। अन्य तर्कशास्त्रियों के अनुसार तादात्म्य का नियम का स्वरूप कुछ दूसरा है। तर्कशास्त्र में तादात्म्य नियम के अनुसार कोई भी वस्तु अपने आप में बराबर होती है, जैसे अ = अ। हीगेल के अनुसार अ = – अ है। इन दोनों में तादात्म्य सम्बन्ध है। इसप्रकार तादात्म्य का नियम तथा निषेध का नियम, इन दोनों नियमों का स्वरूप हीगेल के दर्शन में भिन्न है।

इसप्रकार हीगेल का द्वन्द्ववाद का सिद्धान्त यही है।